Roll No.: .....

Total No. of Questions : 5] [Total No. of Printed Pages : 1

W-3410(A)

M.A.(Fourth Semester) Examination, (Second Chance) June-2020

HINDI

Paper - 403

Tulsidas

Time : Three Hours

Maximum Marks : 85 (For Regular Students) ***Maximum Marks : 100 (For Private Students)***

Minimum Pass Marks : 29 ***Minimum Pass Marks : 34***

नोट : **सभी** प्रश्न हल करना अनिवार्य हैं। सभी प्रश्नों के अंक उनके सम्मुख अंकित किये गये हैं।

Q.1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 3×8=24/3×9=27

क) मंगल मूरति मारूत–नन्दन। सकल अमंगल मूल निकन्दन।
पवन तनय संतन–हितकारी। हृदय विराजत अबध बिहारी।।
मातु–पिता, गुरू गनपति, सारद। सिवा समेत संभु, सुक, नारद।
चरन बंदि बिनवैं सब काहू। देहु राम पद–नेह–निबाहू।।
बंदौं राम लखन–वैदेही। जे तुलसी के परम सनेही।।

ख) ऐसी मूढ़ता या मन की।
परिहरि राम भगति सुर सरिता, आस करत ओस कन की।।
धूम समूह निरखि चातक ज्यों, तृषित जानि मति घन की।
नहिं तँह सीतलता न वारि, पुनि हानि होत लोचन की।।
ज्यों गच काँच बिलोकि सेन जढ़, छाँह आपने तन की।
टूटत अति आतुर अहार वस, छति बिसारि आनन की।।
कहँ लौं कहौं कुचाल कृपानिधि! जानत हौ गति जन की।
तुलसीदार प्रभु हरहु दुसह दुख, करहु लाज निज पन की।।

ग) अबलौं नसानी, अब न नसैहों।
राम कृपा भव–निसा सिरानी, जागे फिर न डसैहों।।
पायो नाम चारू चिंतामनि, उर–कर तें न खसैहों।
स्याम रूप सुचि रूचिर कसौटी, चित–कंचनहिं कसैहों।।
पर बस जानि हैंस्यो इन इंद्रिन निज बस है न हंसैहों।
मन मधुषहिं प्रन करि तुलसी रघुपति पद कमल बसैहों।।

Q.2. भक्तिकाव्य की दृष्टि से तुलसी काव्य की समीक्षा कीजिए। 15/18

Q.3. 'समन्वय की विराट चेष्टा तुलसी काव्य में सर्वत्र दृष्टि गोचर होती है।' कथन की सम्यक समीक्षा कीजिए। 15/18

Q.4. विनय पत्रिका भक्तों का सर्वस्व है। कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिए। 15/17

Q.5. निम्नलिखित के संक्षिप्त उत्तर दीजिए। 4×4=16/4×5=20

i) कवितावली का वैशिष्ठ्य।
ii) अपने जीवन के लिए रामकथा का सन्देश
iii) विनय पत्रिका की वर्तमान में प्रासंगिकता
iv) तुलसी की बाल्यावस्था।